व्यक्ति अपना भाग्य विधाता

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

व्यक्ति अपने भाग्य का विधाता स्वयं है। अन्य केवल निमित्त बन सकते हैं। पुरुषार्थ और भाग्य एक सिक्के के दो पहलू हैं। आज का पुरुषार्थ कल भाग्य बनायेगा। पुरुषार्थ ही भाग्य बनाता है। भूत, वर्तमान और भविष्य को साथ लेकर चिंतन करना पड़ेगा। वर्तमान जीवन का कारण पूर्वजन्म है। पूर्वजन्म में जो जैसा किया है उसे वर्तमान जीवन में वैसा परिणाम प्राप्त होता है। यह कर्मबीज का परिणाम है। इसमें अपवाद नहीं हो सकता। जो अच्छा बोता है उसे अच्छा परिणाम प्राप्त होता है और जो बुरा बोता है उसे बुरा परिणाम प्राप्त होता है।

भाग्य को अच्छा बनाने के लिए कठिन पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है। ईश्वर के भरोसे बैठकर निष्क्रिय रहने से भाग्य नहीं बदल जाता। सोते हुए सिंह के मुंह में मृग अपने आप प्रवेश नहीं कर जाता। उसे भी प्रयास करना पड़ता है। परिश्रमी व्यक्ति को ही लक्ष्मी प्राप्त होती है। लक्ष्मी भाग्य से प्राप्त होती है ऐसा कायर लोग कहते हैं। भाग्य को बनाने के लिए पुरुषार्थ अपेक्षित है। व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है। दूसरा व्यक्ति सहयोगी बन सकता है, सुविधा दे सकता है किन्तु अपना निर्माण अपने को ही करना पड़ता है। व्यक्ति का कार्य और उद्देश्य अच्छा होना चाहिए। ईश्वर उसी की सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं।

पुरुषार्थी व्यक्ति को चरैवेति–चरैवेति की पद्धति अपनानी चाहिए। यदि आदमी स्वयं अपनी राह खोजता है तो उस पर चलने वाले लाखों लोग हो जाते हैं। स्वयं पुरुषार्थी और कर्मयोगी बनकर कड़ी मेहनत करनी चाहिए। निर्माण अर्थात् विकास स्वयं का ही होता है। बाह्य विकास भौतिक विकास है और आन्तरिक विकास आध्यात्मिक विकास है। दोनों विकास आवश्यक हैं। बाह्य विकास के द्वारा बाहरी उन्नति होती है। बाह्य विकास के लिए अनेक उपादानों की आवश्यकता होती है। मानव शक्ति, उद्देश्य की पवित्रता, तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता और बाह्य सहयोग बाह्य विकास के लिए आवश्यक होते हैं।

दूसरों की भावना को भी आदर देना चाहिए। बाह्य विकास के लिए व्यावहारिक ज्ञान होना आवश्यक है। अधिकारियों को प्रशिक्षण इसलिए दिया जाता है क्योंकि उनका संबंध लोकजीवन से जुड़ा रहता है। लोगों की भावना सरकार तक और सरकार की योजनाओं को लोगों तक पहुंचाना लोकसेवकों का कार्य है। सरकार की योजनाओं का प्रचार–प्रसार और जनता के बीच में ले जाने की योग्यता सरकारी अधिकारियों में होनी चाहिए। विकास की योजनाओं का ज्ञान भी होनी चाहिए तभी निर्णय सही हो सकता है। किसी कार्य के लिए अनेक व्यक्तियों की आवश्यकता होती है और टीमस्प्रिट से कार्य करने की भावना होनी चाहिए।

व्यक्तित्व विकास के लिए आत्मनिरक्षण और परीक्षण की आवश्यकता होती है। प्रेम, भाईचारा, सहनशीलता, प्रमोद, करुणा की भावना होनी चाहिए। मानवीय गुण भीतरी जगत से संबंधित है। इसलिए भीतर भी देखना पड़ता है। जगत नियंता व्यवस्थित शक्ति है। व्यक्ति का बहुत बड़ा योगदान सृष्टि को संचालित और सुव्यवस्थित करने में होता है। आंतरिक शक्ति बहुत ही प्रभावशाली होती है। हमारे देश के ऋषियों मुनियों ने आन्तरिक शक्तियों का जागरण कर विश्व के रहस्य को जान लिया। विश्वामित्र वशिष्ठ आदि ऋषियों ने आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करके शक्ति अर्जित की थी।

साधना में बहुत अधिक शक्ति निहित है। साधना के द्वारा स्वनिर्माण होता है। लक्ष्य निर्धारण मनुष्य को स्वयं करना पड़ता है। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए स्वयं प्रयास करना पड़ता है। बाह्य साधन केवल सहायता करते है। निर्माण के लिए प्रयास करना चाहिए। जीवन निर्माण के अनेक क्षेत्र हैं। सामाजिक, राजनैतिक, प्रशासनिक, चिकित्सा के क्षेत्र हैं। जिसकी रुचि जिसमें होती है वह उस क्षेत्र में विकास करता है।

सेवा एक ऐसा गुण है जिसके द्वारा अहंकार नष्ट हो जाता है। सेवा तीन प्रकार से की जा सकती है– तन, मन और धन से। तन की सेवा शारीरिक परिश्रम के द्वारा की जा सकती है। मन की सेवा समाज को चिन्तन, मनन, नये विचार और मार्ग दर्शन के द्वारा की जा सकती है। समाज के उन वर्गों के उत्थान के लिए जो धन से हीन है उनको आर्थिक सहायता देकर सेवा की जा सकती है।

व्यक्ति समाज की सबसे छोटी इकाई है। अतः अगर व्यक्ति सुधर जाये तो समाज का सुधार हो सकता है। समाज का सुधार हो जाये तो राष्ट्र अपने आप सुधर जायेगा। मानव परिश्रम करके अपने भाग्य का निर्माण कर लेता है। कठिन परिश्रम, पक्का इरादा और दूरदृष्टि निर्माण के लिए आवश्यक होते हैं।

करु बहियां बल आपने छाण बिरानी आस।

जाके आंगन है नदी सो कत मरत पियास।।

अर्थात् भाग्य को बनाने के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। स्वयं प्रयास करना चाहिए। पुरुषार्थी व्यक्ति जीवन में सफल होता है।